Perceptual organization

Perceptual organization — गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्यक्षीकरण की एक प्रधान विशेषता इसका संगठन है। यह संगठन की क्रिया कैसे होती और किस प्रकार आकार एवं पृष्ठभूमि का निर्माण होता है, इसके लिए इन्होंने कई प्रकार के कारकों एवं या सिद्धांतों का उल्लेख किया है, जिन्हें प्रत्यक्षीकरण के संगठन के नियम या सिद्धांत कहते हैं।

Woodworth & Sheehan ने प्रत्यक्षीकरण के संगठन के नियमों को तीन भागों में विभाजित किया है —

(1) Peripheral factor — ऐसे कारक या नियम जो field force या उत्तेजना की विशेषताओं से संबंधित होते हैं उन्हें Peripheral laws कहा जाता है।

(क) similarity

(ख) Proximity — Van ~~schiller~~ schiller ने भी गति प्रत्यक्षीकरण पर प्रयोग करके समीपता के नियम को प्रमाणित किया।

(ग) continuity

(घ) common motion

(ङ) Symmetry

(2) Central factors — केन्द्रीय नियम वास्तव में केन्द्रीय स्नायुमंडल की कार्यवाही पर आधारित तथा उत्तेजनाओं पर आरोपित होते हैं। इसका सम्बन्ध केन्द्रीय प्रक्रियाओं से है, जो मस्तिष्क में

व्यक्ति होती है। इनके कारण भी उत्तेजना क्षेत्र की वस्तुएँ समूहित तथा संगठित होती है। इनके निम्नलिखित प्रकार है:—

(क) familiarity (परिचय) — इसके अनुसार उत्तेजना क्षेत्र की परिचित वस्तुएँ संगठित होकर आकार का रूप धारण कर लेती है। अपरिचित वस्तुओं में संगठित तथा सामूहित होने की शक्ति नहीं रहती है। जैसे RAMEATSAMANGO. यह वाक्य सार्थक होते हुए भी निरर्थक लगता है, चूँकि हम ऐसे वाक्य या लिखावट से परिचित नहीं होते है।

[ख] Set (वृत्ति) — इसके कारण वातावरण की ऐसी वस्तुएँ जो हमारी मानसिक वृत्ति के अनुकूल होती है, एक आकार के रूप में उभर आती है। उत्तेजना में परिवर्तन होने पर भी इसी मानसिक वृत्ति के कारण हम उसे पहले की तरह ही देखते है। जैसे तीन अलग-2 रेखाओं को भी हम त्रिभुज ही देखते है।

[ग] Reinforcing factor — यह Pavlov के अनुकूलित प्रतिक्रिया के प्रबलन अथवा Thorndike के प्रभाव नियम के समान है। इसके अन्तर्गत निम्न-लिखित कारकों का उल्लेख मिलता है —

(क) Closure (पूर्णता) — इस नियम के अनुसार जो स्थान कई रेखाओं से घिरा रहता है उसे आकार के रूप में उभरने की संभावना अधिक रहती है। ऐसी वस्तुओं में आकार गुण अधिक पाया जाता है। इसलिए अर्थहीन होते हुए भी वस्तु संगठित तथा अर्थपूर्ण दिखाई पड़ती है। पूर्णता के प्रत्यक्ष का

उल्लेख सर्वप्रथम गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने किया और इसे जन्मजात प्रवृत्ति माना।

[ख] Prägnanz (अर्थपूर्णता) इस नियम के अनुसार व्यक्तियों में वस्तुओं को संगठित देखने की एक जन्मजात प्रवृत्ति होती है। जिस कारण व्यक्ति निरर्थक वस्तुओं को भी सार्थक रूप में देखता है। क्योंकि उत्तेजना क्षेत्र में निरर्थक वस्तु के होने पर व्यक्ति के मानस पर असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है· क्योंकि उसे वस्तुओं को सार्थक देखने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। इस असंतुलित स्थिति के कारण मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। इस तनाव के कारण व्यक्ति निरर्थक वस्तु का सार्थक प्रत्यक्षीकरण करने लगता है। जिससे असंतुलित स्थिति समाप्त हो जाती है और मानसिक तनाव दूर हो जाता है-(Koffka)।

[ग] Good figure — इस नियम के अनुसार उत्तेजना क्षेत्र की जिन वस्तुओं से एक उत्तम चित्र बनने की संभावना होती है, वे आपस में समूहित तथा संगठित होकर अर्थपूर्ण बन जाती है। बाकी वस्तुएँ पृष्ठभूमि में रह जाती है। इस नियम का उल्लेख Wertheimer ने 1923 में किया। और दावा किया कि इस नियम के व्यक्ति होने में किसी तरह के अनुभव या शिक्षण का हाथ नहीं होता है।

इस प्रकार गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उपर्युक्त कारकों या नियमों के आधार पर प्रत्यक्षीकरण संगठित बनता है।